कुमार जीवन - 29

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **दृष्टि तथा वृत्ति परिवर्तन के लिए युक्तियाँ... कुमारों की भट्ठी में प्राण**

अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य :- आज बापदादा सर्व पुरुषार्थियों का संगठन देख रहे हैं। इसी पुरुषार्थी शब्द में सारा ज्ञान समाया हुआ है। पुरुषार्थी अर्थात् पुरुष अर्थात् रथी। किसका रथी है? किसका पुरुष है? इस प्रकृति का मालिक अर्थात् रथ का रथी। एक ही शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ तो क्या होगा! सर्व कमजोरियों से सहज पार हो जायेंगे। **पुरुष प्रकृति के अधिकारी हैं न कि अधीन है। रथी रथ को चलाने वाला है न कि रथ के अधीन हो चलने वाला।**

➳ _ ➳ अधिकारी सदा सर्वशक्तिवान बाप की सर्वशक्तियों के अधिकारी अर्थात् वर्से के अधिकारी वा हकदार है। सर्वशक्तियाँ बाप की प्रापर्टी हैं और प्रापर्टी का अधिकारी हरेक बच्चा है। यह सर्व शक्तियों का राज्य भाग्य बापदादा सभी को जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में देते हैं। जन्मते ही यह **स्वराज्य सर्व शक्तियों का, अधिकारी स्वरूप के स्मृति का तिलक**, और **बाप के स्नेह में समाये हुए स्वरूप के रूप में दिलतख्त**, सभी को जन्म लेते ही दिया है। **जन्मते ही विश्व कल्याण के सेवा का ताज** हर बच्चे को दिया है। तो जन्म के अधिकार का तख्त, तिलक, ताज और राज्य सबको प्राप्त है ना?

➳ _ ➳ ऐसे चारों ही प्राप्तियों की प्राप्ति स्वरूप आत्मायें कमजोर हो सकती हैं? क्या यह चार प्राप्तियाँ सम्भाल नहीं सकते हैं? कभी तिलक मिट जाता, कभी तख्त छूट जाता, कभी ताज के बदले बोझ उठा लेते। व्यर्थ कखपन की टोकरी उठा लेते। नाम स्वराज्य है लेकिन स्वयं ही राजा के बदले अधीन प्रजा बन जाते। ऐसा खेल क्यों करते हो? **अगर ऐसा ही खेल करते रहेंगे तो सदा के राज्य भाग्य के अधिकार के संस्कार अविनाशी कब बनेंगे!** अगर इसी खेल में चलते रहे तो प्राप्ति क्या होगी! जो अपने आदि संस्कार अविनाशी नहीं बना सकते वह आदिकाल के राज्य अधिकारी कैसे बनेंगे।

➳ _ ➳ अगर बहुतकाल के योद्धेपन के ही संस्कार रहे अर्थात् युद्ध करते-करते समय बिताया, आज जीत कल हार। अभी-अभी जीत, अभी-अभी हार। सदा के विजयीपन के संस्कार नहीं तो इसको क्षत्रिय कहा जायेगा या ब्राह्मण? ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। क्षत्रिय तो फिर क्षत्रिय ही जाकर बनेगा। **देवता की निशानी और क्षत्रिय की निशानी में देखो अन्तर है? यादगार चित्रों में उनको कमान दिखाया है, उनको मुरली दिखाई है।** मुरली वाले अर्थात् मास्टर मुरलीधर बन विकारों रूपी सांप को विषैले बनने के बजाए विष समाप्त कर, शैया बना दी। कहाँ विष वाला सांप और कहाँ शैया! इतना परिवर्तन किससे किया? मुरली से। ऐसे परिवर्तन करने वाले को ही "विजयी ब्राह्मण" कहा जाता है। तो अपने से पूछो - "मैं कौन?" **(27-4-1983)**

➢➢ ऐसे शब्द जिसमे सारा ज्ञान समाया हुआ है

➳ _ ➳ पुरुषार्थी

➳ _ ➳ नश्टोमोहा

➳ _ ➳ मनमनाभाव

➳ _ ➳ मध्याजी भव

➳ _ ➳ आवागमन

➳ _ ➳ वानप्रस्थी

➳ _ ➳ पवित्रता

➳ _ ➳ ड्रामा

➳ _ ➳ बाप

➳ _ ➳ चक्र

➳ _ ➳ सीडी

➳ _ ➳ झाड

➳ _ ➳ कमल

➳ _ ➳ बिंदु

➳ _ ➳ त्रिलोक

➳ _ ➳ त्रिकालदर्शी

➳ _ ➳ स्वदर्शन

➳ _ ➳ त्रिमूर्ति

➳ _ ➳ याद

➳ _ ➳ मुरली

➢➢ बाप से हुई 4 प्राप्तियां

➳ _ ➳ तिलक

→ स्मृति का तिलक

→ स्वराज्य का तिलक

→ स्वमान का तिलक

→ विजयी भव का तिलक

→ योगी भव का तिलक

→ अमर भव का तिलक

➳ _ ➳ ताज

→ विश्व कल्याण का ताज

→ विश्व जिम्मेवारी का ताज

→ पवित्रता का ताज

→ लाइट का ताज

➳ _ ➳ तख़्त

→ भ्रकुटी का अकला तख़्त

→ परमातम दिल तख़्त

→ एकरस स्थिति का तख़्त

➳ _ ➳ राज्य

→ सर्व शक्तियों पर राज्य

➢➢ आत्मिक स्वरुप का तिलक क्यों / कैसे मिट जाता है ?

➳ _ ➳ मैं पैन से

➳ _ ➳ देह भान में आने से

➳ _ ➳ क्यों / क्या के प्रश्नों में जाने से

➳ _ ➳ संशय आने से

➳ _ ➳ इर्ष्या / द्वेष से

➳ _ ➳ परचिन्तन परदर्शन से

➳ _ ➳ बाह्यमुखता से

➳ _ ➳ देह देखने से

➢➢ दिल तख़्त कैसे छूट जाता है ?

➳ _ ➳ दिल में किसी और को बिठाने पर

➳ _ ➳ दिल में सच्चाई सफाई न होने पर

➢➢ ताज कब उतर जाता है ?

➳ _ ➳ ताज को साधारण समझने पर

➳ _ ➳ ठीक से सेवा न निभाने पर / डिससर्विस करने पर

➳ _ ➳ जिसकी सेवा कर रहे हैं, उसी को भूल जाते

→ मैं करनहार हूँ

■ पर **करावनहार के आधार पर करनहार हूँ**